स्त्री–पुरुष में भेद

प्रिय योग समाधि,
प्रेम।

सिद्ध के लिए स्त्री-पुरुष में कोई भी भेद नहीं हैं।
पर, साधक के लिए है।
और, जितना कमजोर साधक हो उतना ही ज्यादा है।
भेद से अर्थ असमानता नहीं है—भेद से अर्थ है भिन्नता।
और, भिन्नता है, और प्रगाढ़ है।
जैविक अर्थ में दोनों के बीच अलंध्य खाई है।
और, वही दोनों के बीच आकर्षण का सेतु भी है।
प्रकृति भिन्नता से आकर्षण निर्मित करती है।
ऐसे आकर्षण का नाम ही काम (Sex) है।
काम में जीवन-ऊर्जा (Life Energy) का बहिर्गमन होता है।
साधक इसी ऊर्जा को अंतर्गमन में नियोजित करता है।
लेकिन, यह दमन से नहीं होना चाहिये।
दमन विकृति बन जाता है।
ऊर्जा का अंतर्गमन होना चाहिये विधायक (Positive)
विधायक अर्थात काम से लड़कर नहीं, वरन राम को चाहकर।